ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-2* Issue-8* September- 2017
Innovation The Research Concept

महोबा के आल्हा–ऊदल की वीरता पर अध्ययन

एल0सी0 अनुरागी
असिस्टेंट प्रोफेसर,
राजनीति विज्ञान विभाग,
वीरभूमि रा0स्ना0महाविद्यालय,
महोबा

सारांश

माधौगढ़ का राजकुमार करिंघाराम महोबा से रानी मल्हना का नौलखा हार, हाथी गजपचशावद, घोड़ा पपीहा, लाखा पातुर नामकी नृत्यांगना आदि लूटकर दस्सराज और बच्छराज को कैद कर माधौगढ़ ले गया। दस्सराज व बच्छराज को कोल्हू से पिरवा दिया और उनकी खोपड़ियां बरगद के वृक्ष से लटकवा दीं। यह सुनकर ऊदल ने अपने पिता की हत्या का बदला लेने का निश्चय किया। मलखान, ऊदल के साथ युद्ध के लिए तैयार हुए और उसने कहा – शीश काटि लैहों करिया को, औ जम्बै को डारिहौं मारि। नीव खोदिकै गढ़ माड़ौं की, नदी नर्वदा दिहौं बहाय। आल्हा–ऊदल, सैयद, ढेबा आदि ने माधौगढ़ जाकर माड़ौगढ़ के राजा जम्बै के पुत्रों अनुपी, टोडरमल, सूरज व करिंघाराय को युद्ध में मार गिराया और आल्हा ने राजा जम्बै को जंजीरों से बांध लिया और उसे माधौगढ़ के किला में ही कोल्हू से पिरवा दिया। मलखान ने करिंघाराय को युद्ध में गिरा दिया और सिर बरगद की डाल पर टंगवा दिया। इस प्रकार आल्हा–ऊदल आदि ने राजा जम्बै व उसकी सेना को पराजित कर दस्सराज व बच्छराज की हत्या का बदला लिया। जब ऊदल ने माधौगढ़ पर आक्रमण किया था, उस समय वह केवल 12 वर्ष का था। आल्हा–ऊदल की वीरता से मातृभक्ति की रक्षा की प्रेरणा मिलती है।

मुख्य शब्द : आल्हा, ऊदल, नृत्यांगना लाखापातुर, राजा जम्बै, जम्बै का पुत्र करिंघाराय, राजकुमारी बिजमा, गुरू झिलमिल, रानी कुसला, रूपनहार, गजपचशावद, भौंरानन्द हाथी।

प्रस्तावना

ऐतिहासिक महोबा आल्हा–ऊदल की वीरता के लिए पूरी दुनिया में जाना जाता है। चंदेलवंश के संस्थापक नान्नुकदेव जिन्हें चन्द्रवर्मन के नाम से भी जाना जाता है, ने महोबा के तत्कालीन प्रतिहार शासकों पर अपनी विजय के उपलक्ष्य में लगभग 831 ई0 में महोबा को अपनी राजधानी बनाया और शक्ति पूजा की प्रतीक श्री बड़ी चन्द्रिका जी की महिषासुर मर्दिनी रूप की 18 भुजी प्रतिमा की स्थापना करायी एवं इसे महोत्सव नगर का नाम दिया। परमाल रासो के अनुसार महोबा लगभग 400 वर्षों तक चंदेलों द्वारा स्थापित जेजाकभुक्ति प्रदेश रहा जिसे वर्तमान में बुन्देलखण्ड कहते हैं। महोबा के राजा परमाल के यहां दो वीर सैनिक दस्सराज और बच्छराज तैनात थे। दस्सराज के दो पुत्र आल्हा और ऊदल व बच्छराज के दो पुत्र मलखान और सुलखान थे। आल्हा ऊदल की माता का नाम देवलदे या देवकुंवरि था। आल्हा, ऊदल का जन्म महोबा के ग्राम दिसरापुर (दशपुरवा) में हुआ था। मदनपुर झांसी के मंदिर में प्राप्त शिलालेखों से पता चलता है कि वीर आल्हा सं0 1235 (1178 ई0) में विद्यमान थे। आल्हा जयंती बैशाख अमावस्या को मनाई जाती है। ऊदल का जन्म ज्येष्ठ सुदी 10 सम्वत 1222 विक्रमी है। आल्हा ऊदल का पराक्रम काल सन् 1167 ई0 से 1182 ई0 तक माना जाता है। आल्हा का विवाह मछला देवी से व ऊदल का विवाह नैनागढ़ की राजकुमारी सुमना से हुआ था। जगनिक महोबा के राजा परमाल के आश्रित थे। जगनिक द्वारा लिखित आल्हा खण्ड तथा परमाल रासो की प्राचीनतम लिखित प्रति फर्रूखाबाद के कलेक्टर सर चार्ल्स इलियट को सन् 1865 ई0 में प्राप्त हुई, इसमें 23 खण्ड तथा 52 युद्धों का वर्णन है, इसमें आल्हा–ऊदल की वीरता का वर्णन किया गया है। आल्हाखण्ड की रचना सन् 1140 ई0 मानी जाती है। इस ग्रन्थ से प्रेरणा पाकर लगातार आल्हा पर आधारित ग्रन्थों की रचना होती रही व वर्तमान में शोध कार्य जारी हैं। कलेक्टर इलियट ने अपने मित्र बंगाल के प्रशासनिक अधिकारी व इतिहासकार विलियम वाटर फील्ड के जरिये जगनिक रचित आल्हाखण्ड की सभी बावन लड़ाईयाँ संग्रहीत कराकर उन्हें विविध भाषाओं में लिपिबद्ध कराया। बाद में जार्ज वियर्सन अरसन ने आल्हा की सम्पूर्ण लड़ाईयों का अध्ययन कर ''दि ले ऑफ आल्हा'' शीर्षक की पुस्तक लिखी जिसका प्रकाशन ऑक्सफोर्डयूनीवर्सिटी के

मिलफोर्ड लंदन स्थित कार्यालय में सन् 1923 में किया गया। कालान्तर में इंगलैण्ड के बिनसेन्ट स्मिथ ने ''दि ले ऑफ आल्हा'' का बुन्देली भाषा में व जार्ज वियर्सन ने भोजपुरी भाषा में अनुवाद कराया। अंग्रेजों द्वारा लिपिबद्ध की गई ये प्रतियां आज भी ऑक्सफोर्ड यूनीवर्सिटी के संग्रहालय व पुस्तकालय में सुरक्षित हैं, जबकि जगनिक द्वारा लिखे गए परमाल रासो की मूल प्रति बिट्रेन में राजकीय संग्रहालय में रखी है। आल्हाखण्ड में वर्णित 52 लड़ाइयों में आल्हा, ऊदल की वीरता का परिचय मिलता है। उनकी वीरता का बखान अल्हैत आल्हा गायकी के माध्यम से करते हैं। आल्हा ऊदल की युद्ध महाभारत की तरह विशाल युद्ध रहा है। पांडव भगवान् श्रीकृष्ण की मदद से आसानी से महाभारत युद्ध जीत गए थे, इसलिए भीम ने कौरवों से पुनः युद्ध करने के लिए भगवान् श्रीकृष्ण से वरदान मांगा कि उन्हें पुनः जन्म देकर यह इच्छा पूरी करें। भगवान् ने तथास्तु कह दिया, तब क्विदंती के अनुसार कलियुग में कौरव–पांडव पुनः जन्में। युधिष्ठर आल्हा के रूप में जन्में, भीम ऊदल बनकर, सहदेव मलखान बनकर, अर्जुन ब्रह्मानन्द बनकर, नकुल लाखन बनकर, दुःशासन धांधू बनकर, कर्ण ताहर बनकर, अभिमन्यु इंदल बनकर, द्रौपदी पृथ्वीराज की पुत्री बेला बनकर जन्मीं। इसके बाद आल्हा ऊदल आदि का 52 लड़ाइयों में घोर युद्ध हुआ। आल्हा, ऊदल की पहली लड़ाई माड़ौं के राजा जम्बै से हुई जम्बै पुत्र करिंघाराय (करिया) ने आल्हा, ऊदल के पिता दस्सराज व बच्छराज को महोबा में सोते हुए कैद कर लिया था और माड़ौ में ले जाकर उनको कोल्हू से पिरवा दिया था। जब ऊदल बारह वर्ष का हुआ, तब उसने माड़ौगढ़ पर चढ़ाई कर अपने पिता की हत्या का बदला लिया। आल्हा, ऊदल की इस लड़ाई व अन्य लड़ाइयों को बुन्देलखण्ड में वर्षा ऋतु में ग्रामीण अल्हैतों से सुनते हैं और बुन्देलखण्ड के आम आदमी की जुबान पर ये पंक्तियों रहती हैं – बारह बरस लौ कूकर जिएं और तेरह लौ जिएं सियार। बरसि अठारह छत्री जिएं आगे जीवन को धिक्कार। आल्हा, ऊदल की वीरता पर देश–विदेश में शोध कार्य जारी है।

अध्ययन का उद्देश्य

आज हमारे देश पर आतंकी हमले, सेना की गोपानीय जानकारियां शत्रुओं के हाथ लग रहे हैं जिससे राष्ट्रीय सुरक्षा का संकट सामने है। ऐसी स्थिति में आल्हा–ऊदल की वीरता से प्रेरणा लेकर शत्रुओं को जड़ से खत्म कर, मातृभूमि की रक्षा करना है। आल्हा–ऊदल की वीरता को प्राथमिक से उच्च महाविद्यालयों तक के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाना चाहिए।

आल्हा–ऊदल की माड़ौ के राजा जम्बै से लड़ाई

जब ऊदल बारह वर्ष के थे, शिकार खेलते हुए महोबा से उरई तक आ गए। ऊदल का घोड़ा रसबेंदुला प्यासा था। ऊदल ने वहां की पनिहारियों से घोड़ा को पानी पिलाने को कहा। तब पनिहारियों ने ऊदल का परिचय पूंछा। ऊदल ने कहा नगर महोबा यक बस्ती है, जहां पर बसै रजा परमाल। छोटे भैया हम आल्हा के, औ ऊदनि है नाम हमार। ऊदल को बनाफर छोटी जाति जानकर उसके घोड़े को पानी नहीं पिलाया। तब, इतनी सुनिकै ऊदनि जरिगे, औ गुलेल को लियो उठाय। जितनीं गागर थीं पनघट पर, ऊदनि फोर दई तत्काल। इसके आद ऊदल महोबा वापस आ गए। पनिहारियों द्वारा उरई के राजा माहिल से ऊदल द्वारा गघरी फोंड़ने की शिकायत की गई। तब माहिल ने महोबा के राजा परमाल को चिट्ठी लिखकर ऊदल की शिकायत की। परमाल में जबाब में लिखा कि ऊदल जैसा हमारा लड़का है, वैसे ही तुम्हारा लड़का लगता है, इसे माफ करो, कहो तो मैं सोने की गागरें भिजवा दूं। तीन महीने बाद ऊदल पुनः शिकार खेलने उरई पहुंच गया और माहिल की बगिया से दो हिरनों का शिकार किया। सूचना मिलते ही माहिल ने अपने पुत्र अभई को बगिया भेजा परन्तु ऊदल ने अभई को युद्ध में गिरा दिया और महोबा हिरन लेकर वापस आ गए। तब माहिल लिल्ली घोड़ी में सवार होकर तीन प्रहर में महोबा और राजा परमाल से ऊदल की शिकायत करते हुए कहा कि यदि ऊदल इतना बहादुर है, तो माड़ौ के जम्बै के राजकुमार करिंघाराय (करिया) से अपने पिता की हत्या का बदला क्यों नहीं लेता। जिसने दस्सराज व बच्छराज के सिर को बरगद के वृक्ष में टगवां दिया और उन्हें कोल्हू से पिरवा दिया था। ये बातें ऊदल ने सुन लीं। ऊदल के पूंछने पर माता देवला ने बताया कि करिंघाराय नौलखाहार लूटने आया था जिसे ताल्हन आदि ने हराकर माड़ौं भगा दिया था परन्तु कुछ दिन बाद वह पुनः महोबा आया और उसने महोबा का नौलखाहार, घोड़ा पपीहा, लाखापातुर नाम की नृत्यांगना, हाथी गजपचशावद आदि लूटकर दस्सराज व बच्छराज को कैदकर माधौगढ़ ले गया और उनको कोल्हू से पिरवा दिया और उनकी खोपड़ियां बरगद के वृक्ष से लटकवा दीं। यह सुनकर ऊदल ने अपने पिता की हत्या का बदला लेने का निश्चिय किया, मलखान, ऊदल के साथ युद्ध के लिए तैयार हुए और उसने कहा – शीश काटि लैहों करिया को, और जम्बै को डारिहौं मारि। नीव खोदिकै गढ़ माड़ौं की, नदी नर्मदा दिहौं बहाय। ऊदल, मलखान व सैयद ने ढेबा से माड़ौं विजय हेतु सगुन पूंछा। ढेबा ने सगुन देखकर बताया कि जोगी वेश में माड़ौं की गोपनीय जानकारी ले लो, तो विजय मिलेगी। तब मलखान ने पांच गुदरियां 22 परत की बनवाईं जिनमें हीरा, मोती, मूंगा आदि टांक दिए गए और पांच हथियार छिपा दिए गए। जोगी भेष में सैयद ने सारंगी ली, आल्हा ने डमरू लिया, मलखान ने इकतारा, ढेबा ने खंजरी, सैयद ने सारंगी व ऊदल ने बांसुरी ली और पहले माता देवला व मल्हना के महल में नाच–गाना दिखाया। मल्हना व देवला ने जोगियों को दान–दक्षिणा देते हुए परिचय पूंछा, तब ऊदल ने बताया कि हम जोगी नहीं आप के पुत्र हैं। यह सुनकर दोनों माताएं प्रसन्न हुईं और उन्हें विश्वास हो गया कि ये लोग माड़ौं पर विजय प्राप्त करने में सफल होंगे। दिवला ने आल्हा व ऊदल की भुजाएं पूंज दी और विजय का आशीर्वाद दिया। इसके बाद आल्हा, ऊदल आदि ने जोगी वेश बदलकर क्षत्री रूप धारण किया और सेना तैयार कराकर माड़ौंगढ़ जाने का आदेश दिया। ताला सैयद सिंहनी घोड़ी पर सवार हुए, आल्हा करिलिया घोड़ा पर, मलखान कबूतरी घोड़ी पर, ब्रह्मा हरनागर घोड़े पर, ढेबा मनुरथा घोड़े पर व ऊदल बेंदुला घोड़े पर सवार हुए और 17 दिन में सेना बबुरी बन में पहुँच गई। सेना ने

धूरे पर डेरा डाल दिया। आल्हा, ऊदल की सेना इतनी विशाल थी कि तीन कोस तक तोपें फैली थीं, तीन कोस तक घोड़े व तीन कोस तक हाथी बांधे गए, कुल बारह कोस तक सेना फैली थी। बबुरीवन में दस दिन तक सेना विश्राम करती रही, तब ऊदल ने आल्हा से माड़ौगढ़ पर आक्रमण की रणनीति बनाने के लिए कहा। आल्हा के कहने पर ढेबा ने सगुन देखकर बताया कि जोगी वेश बनाकर माड़ौगढ़ की जानकारी प्राप्त कर आक्रमण करने से सफलता मिलेगी। तब पांचों वीर आल्हा, ऊदल, सैयद, मलखान व ढेबा ने जोगी वेश बनाया और नाचते गाते हुए बबुरी वन से माड़ौं गढ़ पहुंचे। माड़ौंगढ़ में जोगियों ने माड़ौं के राजा जम्बै के पुत्र अनुपी व टोडरमल को नाच गाना दिखाया और ड्योढ़ी दरवाजे पर तैनात अनुपी का भेद जान लिया। इसके बाद जोगी नाचते–गाते बाजार पहुंचे और पनघट तक आ गए जहां उन्होंने डेढ़ प्रहर तक पनिहारियों को नाच दिखाया। वहां रानी कुशला की बांदी भी पानी भरने गई थी। उसने रानी कुशला को जोगियों के नृत्य की बात बतायी और रानी के कहने पर जोगियों को बुलाने गई। बांदी ने जोगियों को रानी के ड्योढ़ी पर ठहराकर कहा कि मैं रानी को खबर कर दूं, तब तक आप सब यहीं ठहरें। वहां आल्हा ने घोड़ा पपीहा, हाथी गजपचशावद बंधा देखा, दस्सराज व बच्छराज की खोपड़ियां बरगद के वृक्ष पर टंगी देखीं, कोल्हू से पेरे गए दस्सराज व बच्छराज की हड्डियां देख आल्हा रो पड़े। तब ऊदल ने कहा कि समय आने पर करिंघाराय (करिया) से बदला लेगें। इसके बाद बांदी आ गई और जोगियों को रानी के महल में नाच–गाने के लिए ले आई। रानी कुशला ने जोगियों की सुन्दरता व हीरे–मोती जड़ित गुदरी व हाथों में सोनें के कड़ा पहने देख पूंछा, ये सब कहां से प्राप्त किये। तब मलखान ने बताया कि कन्नौज के राजा जैचन्द्र के यहां हमने नाच–गाना दिखाया, तो उन्होंने प्रसन्न होकर गुदड़ी व सोने के कड़े बनवा दिए। इस पर रानी को विश्वास हो गया। तब पांचों जोगियों ने नाच गाना प्रस्तुत किया। रानी ने प्रसन्न होकर मुट्ठी भर मोती ऊदल को दिए। तब ऊदल ने अनजान बनकर कहा कि ये किस पेड़ में लगते हैं, तब रानी ने कहा कि ये मोती हैं फल नहीं। ऊदल ने उन मोतियों को फेंक दिया और रानी कुसमा से कहा कि जैसे कन्नौज की रानी तिलका ने नाच गाना दिखाने में हमें नौलखाहार दिया था वैसे आप भी निशानी के रूप में नौलखाहार दीजिए तो आपका संसार में यश बना रहेगा। रानी ने कहा कि मेरी बेटी बिजमा को नाच दिखाओ तभी नौलखाहार दूंगी। बांदी ने सतखण्डा से बेटी को बुलाया और बिजमा पांच वीरा (पान) लेकर नृत्य देखने आयी। बिजमा ने ऊदल को वीरा दिया, बिजमा की सुन्दरता देखकर ऊदल बेहोश हो गया और बिजमा ऊदल की सुन्दरता देखकर बेहोश हो गई। तब रानी ने जोगियों को फटकारा कि तुम लोग छलिया हो किसी राजा के पुत्र हो। मैं अपने पुत्र करिंघाराय को बुलाकर तुम्हारी गर्दन कटवा दूंगी और कोल्हू से पिरवा दूंगी। तब मलखान ने कहा कि रानी संभलकर बात करो। यदि मैं शाप दे दूंगा, तो तुम्हारा महल व राजपाट जलकर भस्म हो जाएगा। रानी कुसला घबड़ा गई उसने ऊदल की बेहोशी का कारण पूंछा। तब मलखान ने बताया कि वीरा में तम्बाकू थी जो छोटे योगी को लग गई, इसलिए उसे मूर्च्छा आ गई। तब तक बेटी बिजमा की मूर्च्छा जाग गई। रानी के पूंछने पर बिजमा ने बताया कि मेरा पैर सीढ़ियों से फिसल गया, मैं गिर पड़ी और मूर्छित हो गई। तब रानी सन्तुष्ट हुई और जोगियों को नाच गाना दिखाने को कहा। जोगियों ने शानदार नृत्य प्रस्तुत कर रानी को मोहित किया और रानी ने नौलखाहार दे दिया। अब जोगी महल से बाहर आ ही रहे थे कि खिड़की के पास बेटी बिजमा खड़ी थीं, उसने ऊदल का हाथ पकड़ लिया और अपने महल में ले आई और कहा कि तुम महोबा के राजकुमार हो, तुमने जोगी भेष बनाकर धोखा दिया है। मैं अपने भाई करिंघाराय को बुलाकर तुम्हें जाने से खत्म करा दूंगी। ऊदल ने कहा कि आपको धोखा हो रहा है। तब राजकुमरी बिजमा ने कहा कि जब माहिल पुत्र अभई का विवाह सिरउँज में हुआ था, मैं वहां न्योते गई थी। वहां मैंने आपको मंडप में देखा था। तभी से मैंने तुम्हें अपना पति मान लिया, अब आप मेरे साथ भांवरें डलवा लो। ऊदल ने कहा कि जब तक हम माड़ौं गढ़ जीतकर अपने पिता की हत्या का बदला नहीं ले लेते, तब तक ब्याह नहीं करेंगे। अब तुम हमें माड़ौं गढ़ जीतने का उपाय बताओ। राजकुमारी बिजमा ने ऊदल से गंगा की शपथ दिलाई कि वह माड़ौगढ़ की विजय के बाद उससे विवाह करेगा। तत्पश्चात बिजमा ने बताया कि लोहागढ़ किले को सुरंग बनाकर ही तोड़ा जा सकता है, बारहदरी में हमारा भाई सूरज बैठता है। तुम बबुरीवन में तोपें लगवाकर विजय प्राप्त कर सकते हो। इतना भेद लेकर ऊदल बिजमा के महल से चारों योगियों के पास आये और बिजमा के साथ विवाह होने की बात बतायी। आल्हा और मलखान ने कहा कि हम ब्याह के लिए नहीं बल्कि अपने पिता का बदला लेने आये हैं और सभी जोगी लोहागढ़ किले के फाटक पर आ गए। जोगियों ने राजा जम्बै व उसके पुत्र करिंघाराय को नृत्य दिखाकर मोहित किया। राजा ने जोगियों से चार माह तक विश्राम करने व मनचाहा दान लेने के लिए कहा परन्तु जोगी नहीं ठहरे और ऊदल ने लाखा पातुर नृत्यांगना का नृत्य दिखवाने के लिए कहा। राजा ने लाखापातुर का नृत्य दिखवाया। ऊदल ने लाखापातुर को नौलखाहार दिया जिससे वह समझ गई कि ये जोगी नहीं वरन आल्हा, ऊदल आदि यहां आ चुके हैं। लाखा पातुर के पास नौलखाहार देख राजा जम्बै ने पूंछा कि यह हार तुम्हारे पास कैसे आया, उसने बताया कि जोगियो ने इनाम में दिया है। तब जम्बै ने अपने पुत्र करिंघाराय से रानी कुसला से हार लाने के लिए कहा। रानी ने करिंघाराय को बताया कि हार टूट गया है, पटवा के पास ठीक होने गया है। तब करिया ने कहा कि टूटा हार लाओ। तब रानी ने वास्तविकता बताई कि उसने हार जोगियों को दे दिया है। राजा जम्बै ने अपने पुत्र करिंघाराय को जोगियों को बुलाने के लिए कहा। करिंघाराय तीन घरी की यात्रा करते हुए जोगियों के पास पहुंचा और राजा के पास चलने के लिए कहा परन्तु वे तैयार नहीं हुए। तब करिंघाराय ने तलवार निकाली जबाव में जोगियों ने भी तलचार खींच ली इससे करिंघा समझ गया कि ये जोगी नहीं वरन महोबा के राजकुमार हैं। तब

जम्बै ने अपने पुत्र सूरज को जोगियों को कैद कराने हेतु सेना तैयार करने को कहा तब तक जोगी अपने शिविर बबुरीवन में आ चुके थे। उन्होंने माता देवला को बताया कि उन्होंने नौलखाहार लाखापातुर को दे दिया। यह सुनकर माता प्रसन्न हुई। इसके बाद ऊदल ने एक धोबी से नर्वदा नदी पार करने हेतु कम पानी भराव वाला स्थान पूंछा और चन्दन बढ़ई की सहायता से नौ सौ बढ़ई की सहायता ली और बबुरी वन कटवाकर लोहागढ़ किले जाने के लिए रास्ता बनवाया और माड़ौंगढ़ पर विजय प्राप्ति हेतु रणनीति बनाई।

ऊदल की अनुपी व टोडरमल से लड़ाई

जम्बै पुत्र अनुपी अगल–बगल में देा पिस्तौले व कमर में छप्पन छुरियां बांधकर, लाल कमान लेकर सुर्खा घोड़ा में सवार होकर, हाथी, घोड़े की विशाल सेना लेकर ऊदल से युद्ध करने आया। अनुपी के साथ टोडरमल सब्जा घोड़ा में सवार होकर आया। ऊदल का अनुपी से चार घरी तक युद्ध हुआ। उसकी तीन लाख सेना में डेढ़ लाख बची। सर्वप्रथम अनुपी ने ऊदल पर लाल कमान, सांग व तलवार से चोटें कीं परन्तु ऊदल ने सभी चोटें बचा लीं। इसके बाद टोडरमल ने ऊदल पर गुर्ज व तीन सिरोही से चोट की, ऊदल ने सभी चोटें बचा लीं और टोडरमल को युद्ध में बांध लिया। ढेबा टोडरमल को बबुरीवन के शिविर में लाया और वहीं कैदी बनाकर रखा गया।

ऊदल की सूरजमल से लड़ाई

सूरजमल अपनी कमर में बारह छुरियां अगल–बगल में दो पिस्तौले बांधकर, कटार, भाला, लाल कमान लेकर हरियल घोड़ा में सवार होकर चार लाख सेना लेकर ऊदल से युद्ध करने आया। एक प्रहर तक गोला बारूद से, तीन प्रहर तक बन्दूकों से, सात प्रहर तक शिरोही से युद्ध हुआ। पहले सूरज ने लाल कमान, सांग व शिरोही से ऊदल पर चोटें कीं परन्तु ऊदल ने सभी चोटें बचा लीं। तत्पश्चात ऊदल ने शिरोही से सूरजमल पर चोट की और वह मारा गया। उसकी सेना चार लाख से घटकर दो लाख बची।

ऊदल की करिंघाराय से लड़ाई

करिंघाराय शाहाबादी दो भाइयों रंगा व बंगा पठान के साथ पचशावद हाथी में सवार होकर युद्ध के लिए आया। उसका ऊदल से एक प्रहर तक गोला–बारूद से व चार घड़ी तक सांगों से युद्ध हुआ। करिंघाराय ने सांग, गुर्ज से ऊदल पर चोटें की परन्तु ऊदल ने सभी चोटें बचा लीं। तब ऊदल ने सांग की चोट से करिंघाराय को मूर्छित कर दिया। यह देख, करिंघाराय के हाथी ने जंजीर घुमाकर ऊदल की सेना को तितर–बितर कर दिया और ऊदल को जंजीर से बांध लिया। ऊदल भी मूर्छित हो गया। रूपनबारी ने बबुरीवन में आकर आल्हा को ऊदल के कैद होने की सूचना दी, तब आल्हा, मलखान, सैयद आदि युद्ध के लिए माड़ौ आए। युद्ध में करिंघाराय ने मलखान पर सांग और तेगा से चोटें की परन्तु मलखान ने सभी चोटें बचा लीं। मलखान ने करिंघा के हाथी के कलश गिरा दिए, पचशावद हाथी युद्ध में बैठ गया, तब मलखान ने ऊदल को जंजीर से छुड़ा दिया और रूपनबारी द्वारा लाए गए बेंदुला घोड़ा पर ऊदल सवार हो गया। इधर रानी देवला ने गजपचशावद की आरती उतारी और समझाया कि मैंने तुम्हें पाला–पोषा है, तुम हमें भूल गए। ऐसा समझाने पर हाथी को महोबा की याद आ गई और उसने आल्हा का सहयोग किया। रानी देवला के कहने पर आल्हा गजपचशावद पर सवार हुए और युद्ध हुआ। करिंघा के कहने पर रंगा ने ऊदल पर तीन शिरोही से चोटें की, परन्तु ऊदल ने चोटें बचालीं और रंगा को युद्ध में गिरा दिया और ढेबा ने बंगा को युद्ध में मार गिरया। इससे करिंघाराय घबड़ा गया। तब करिंघा ने गुर्ज से ढेबा पर चोटें की परन्तु ढेबा ने सावधानी से सभी चोटें बचा लीं। इसके बाद ऊदल व करिंघा का युद्ध हुआ दोनों ने एक दूसरे पर चोटें की और चोटें बचायीं। तत्पश्चात् करिंघा ने मलखान पर कमान, शिरोही व सांग से चोट की। जिसे मलखान ने बचा लीं, करिया की गोली की मार भी मलखान ने झेली। अन्त में मलखान ने शिरोही से चोट कर करिंघा का सिंर काट दिया जिसे ऊदल से उठा लिया। आल्हा ने करिंघा के सिर को रूपनबारी को दिया और महोबा भेजा कि इस सिर को रानी मल्हना व राजा परमाल को दिखाकर तुरन्त वापस आ जाओ। इधर रानी मल्हना सोच रही थीं कि ऊदल ने नौ माह के बाद माड़ौं से लौटने के लिए कहा था परन्तु एक वर्ष बीत जाने पर भी ऊदल आदि वापस महोबा नहीं आये। इसी बीच उरई से माहिल महोबा आये और अपनी बहिन रानी मल्हना से कहने लगे कि माड़ौं से उरई में खबर आई कि आल्हा–ऊदल आदि युद्ध में मारे गए। यह जानकर रनवास में उदासी छा गयी और माहिल उरई चले गए। इतने में माड़ौं से रूपनबारी पालकी में करिंघा का शीश लेकर महोबा आया और राजा परमाल व रानी मल्हना को शीश दिखाया और कहा कि आल्हा, ऊदल आदि कुशल हैं। रूपना रानी से आज्ञा लेकर माड़ौं लौट आया। राजा जम्बै को अपने चारों पुत्रों के मारे जाने का समाचार मिला जिसे सुनकर वह व रानी कुसला मूर्छित हो गए। तब बेटी बिजमा ने कहा कि मैं ऊदल को कैदकर आपका शोक मिटाऊंगी। बिजमा जादू की पुड़िया लेकर फौज में आई और वह मर्द के रूप में हो गई। बिजमा ने आल्हा पर भैरों वाली जादू की पुड़िया व ढेबा पर बीर महमदा की पुड़िया डाली जिससे दोनों की नजरबन्द हो गई। मलखान पर नारसिंह की पुड़िया डाली जिससे उसकी जबान बन्द हो गई। बिजमा ने पूरी सेना पर मसानी डाल दी जिससे अंधेरा छा गया और जादू की पुड़िया से बिजमा ने ऊदल को मेढ़ा (जानवर) बना दिया और झारखण्ड में ले जाकर गुरू झिलमिल की कुटिया में बांध दिया और गुरू से कहा कि यह महोबा का चोर है, इससे सावधान रहना। इसके बाद बिजमा अपने महल में आ गई और जादू अपने पास बुला लिया। मूर्च्छा जागने पर आल्हा ने ढेबा से ऊदल का पता लगाने के लिए सगुन देखने को कहा। ढेबा ने सगुन देखकर बताया कि बेटी बिजमा ने ऊदल को चुराकर मेढ़ा बनाकर गुरू झिलमिल की कुटिया में झारखण्ड में बांध दिया है। जोगी बनकर हम ऊदल को छुड़ा सकते हैं। तब मलखान और ढेबा जोगी बनकर गुरू झिलमिल की कुटिया में पहुंचे, वहां गुरू को ढेबा व मलखान ने नाच–गाना दिखाया। मलखान की बांसुरी व ढेबा ने डमरू की ध्वनि से गुरू

झिलमिल को मोहित कर दिया जिससे गुरू ने जोगियों से मनचाही चीज मांगने को कहा। मलखान ने मेढ़ा को मांग लिया और गुरू से कहा कि मेढ़ा को हम चेला बनायेंगे इसलिए गुरू जी इसे मनुष्य बना दो। गुरू झिलमिल ने मेढ़ा को मनुष्य बना दिया। इस प्रकार ऊदल कैद से मुक्त हुए और अपने डेरा में आने लगे। तब ऊदल ने कहा कि यदि बिजमा को पता लग गया कि मेढ़ा मनुष्य बन गया है, तो वह पुनः जादू से मेढ़ा बना सकती है। इसलिए विष की पुड़िया गुरू झिलमिल को ही मार डालो। तब मलखान पुनः गुरू झिलमिल के पाए आए और पीने के लिए पानी मांगने लगे। जैसे ही गुरू कुएं से पानी भरने लगे, वैसे ही मलखान ने गुरू का अन्त कर दिया और ऊदल को साथ लेकर अपने डेरे में आ गए। ऊदल को देखकर आल्हा बहुत खुश हुए और जम्बै राजा से युद्ध करने की रणनीति बनाई।

आल्हा–ऊदल की जम्बै से लड़ाई

आल्हा ने तीन घरी तक तोपों से युद्ध किया परन्तु लोहागढ़ किला टूटा नहीं, तब आल्हा ने सुरंग से लोहागढ़ का फाटक तुड़वा दिया और किले की दीवारें गिराकर फाटक के उस पार पहुंचे और युद्ध के लिए सैयद कूदे अलि अलि करि, हिन्दू कूदि परे कहिराम। ऐसे कूदे गढ़ माड़ौं में, जैसे लंका में हनुमान। जम्बै राजा भौंरानन्द हाथी में सवार होकर युद्ध करने आया। जम्बै ने ऊदल व ढेबा पर गुर्ज से चोट की परन्तु उन्होंने सभी चोटें बचा लीं। जम्बै ने आल्हा–ऊदल की सेना को तितर–बितर कर दिया था। तब मलखान ने आल्हा से जम्बै को जंजीर में बांधने को कहा। युद्ध में पहले जम्बै ने आल्हा पर कमान, सांग व शिरोही से चोटें की परन्तु सभी चोटें आल्हा ने बहादुरी से बचा लीं। आल्हा और जम्बै का कटारी से चार घरी तक युद्ध हुआ, परन्तु अन्त में आल्हा ने जम्बै को गजपचशावद की सहायता से जंजीर से बांध लिया। तत्पश्चात आल्हा ने माता देवला को, ऊदल ने माड़ौं की रानी कुशला को वहां बुलवाया और रानी कुशला के सामने जम्बै को माड़ौं किला के कोल्हू से पिरवा दिया और पिता की हत्या का बदला लिया। तब ऊदल ने आल्हा से कहा कि मैंने बिजमा के साथ ब्याह करने का वचन दिया था। इस पर आल्हा ने कहा कि शत्रु की बेटी से ब्याह नहीं करना है। जब बिजमा को अपने भाइयों व पिता की हत्या याद आयेगी, तो वह तुम्हें छल से जान से मरवा सकती है, इसलिए बिजमा को भी खत्म कर दो। ऊदल ने कहा कि मैं उसे खत्म नहीं कर सकता। तब आल्हा के कहने पर मलखान ने बिजमा को तलवार से घायल कर मरणासन्न कर दिया। तब ऊदल ने बिजमा से पूंछा कि हमारा तुम्हारा मिलन कब होगा। उसने कहा कि मैं अगले जन्म में नरवरगढ़ में फुलवा के नाम से जन्म लूंगी, तभी आप से विवाह होगा, मिलन होगा। इतना कहकर बिजमा ने मलखान को शाप दिया कि जैसे आपने मुझे धोखे से मारा, वैसे आप भी धोखे से मारे जाओगे और उसने प्राण त्याग दिए। ऊदल ने बिजमा के शव को गंगा में बहा दिया। इसके बाद आल्हा सेना सहित महोबा लौट आए और जीत की खुशियां मनाई गईं।

निष्कर्ष

आल्हा–ऊदल की वीरता से प्रेरणा लेकर विश्व में व्याप्त हिन्सा व अत्याचार को रोकना व मातृभूमि की सेवा करना है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *बुन्देलखण्ड साहित्यिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक वैभव (डॉ0 रमेशचंद्र श्रीवस्तव) पेज 135, 183*
2. *हाल ए बुन्देलखण्ड पत्रिका जून 2017,पेज 42 एवं 57*
3. *आल्हा खण्ड का ऐतिहासिक संदर्भ सेमिनार महोबा 8 फरवरी 1994*
4. *लोक भारती समाचार पत्र कानपुर 7 अगस्त 2017, पेज 11*
5. *इलियट के आल्हा खण्ड से माड़ौं की लड़ाई*